राजभोग आरती

यशोमती–नन्दन, ब्रजवर नागर,
गोकुल–रञ्जन कान।
गोपी–पराणधन, मदन मनोहर,
कालीय–दमन–विधान॥
अमल हरिनाम अमिय–विलासा।
विपिन–पुरन्दर, नवीन नागरवर,
वंशीवदन सुवासा॥
ब्रज–जन–पालन, असुरकुल–नाशन,
नन्द–गोधन–रखवाला।
गोविन्द, माधव, नवनीत–तस्कर,
सुन्दर नन्दगोपाला॥
यामुन–तटचर, गोपी–वसनहर,
रास–रसिक कृपामय।
श्रीराधा–बल्लभ, वृन्दावन–नटवर,
भकतिविनोद आश्रय॥

श्रीनृसिंहदेवजी की आरती

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाद–दायिने।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटङ्क–नखालये॥
इतो नृसिंहः परतो नृसिंहो
यतो यतो यामि ततो नृसिंहः।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो
नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये॥
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगम्।
दलितहिरण्यकशिपु–तनुभृङ्गम्।
केशव! धृत–नरहरिरूप! जय जगदीश! हरे॥